SHRI SHEEL BHADRA YAJEE : You are a right communist.

SHRI BHUPFSH GUPTA : Why 1 say it is this. Try to understand things. The President will pass legi^laticn *md* enact Jaws in Constiution with this Committee, which is not a legislative function in the truest sense of the term at all. Parliament has not rejected the 32-point progrfmmc of the United Front. Even Ihe Minister himself has said that, as far as possible, he would like to implement this programme. In fact, he said he would like to implement al! the pro-people progr-'names. Eveiy item in the programme is pro-people. Therefore, in order to see that competent advice may come to the President with regard to the ?2-point Programme, within its framework, in respect cf the Members of Parli; rr.ert selected, the United Front must be reflected jn the composition of the Committee, in the same way as it is reflected in the West Bengal Legislative Assembly, viz., 4:1. This is my suggestion. The number should be increased as I srjd. Ne w, I have seme other points.

Now, I should like to know how this Committee is going to function. In the past the functioning of the Committee has been very unsatisfactory. They have met once in six months or so.

SHRI A. P. CHATTERJEE : And that also in Deihi.

SHRI BHUPESH GUPTA : Who says it ?

SHRl LOKANATH MISRA : I do not interrupt, He interrupts you. He is interested much more. You look st me all the time.

SHRI BHUPESH GUPTA : He is right, once or twice.

SHRI KALYAN ROY: He has derailed the United Front and now let him not derail you.

SHRI BHUPESH GUPTA : My locomo-tion is very safe, no derailment. I am a good engine driver. Well, you do not derail.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : No interruptions.

SH1I BHUPESH GUPTA : Now S - Cj-mt'ttees m;st in DMhi. It should not be. Occasionally in regard to Bihar they met in Patna. Once the Committee met in West Bengal also, but that is not enough. The Committee normally should meet in Calcutta. It is absolutely essential. When Parliament is in Session, it may meet in Delhi.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Now, you may continue on the next day. We will take up the other business. Mr. T. N. Singh.

HALF AN HOUR DISCUSSION *RE.* POINTS ARISING OUT OF ANSWER TO UNSTARRED QUESTION NO. 578 GIVEN IN THE RAJYA SABHA ON THE 4TH MARCH, 1970, REGARDING THE DEATH OF SHRI LAL BHADUR SHASTRI

श्री टी० एन० सिंह (उत्तर प्रदेश) : वाइस चेयरमैन महोदय, मैं आज जिस प्रश्न को आपके सामने पेश कर रहा हूं उसको पेश करते हुए मेरे हृदय में तरह तरह की भावनाएं उठ रही हैं । बहुत तकलीफ भी हृदय में है और कुछ हिचकिचाहट भी थी कि मैं अपने पुराने साथी और भारत के एक शानदार प्राइम मिनिस्टर की मृत्यु के बारे में आज एक सवाल पेश करूं, लेकिन मैंने कर्त्तव्य समझा कि ज्यादा दिन तक चुप रहना अनुचित है, इस वास्ते मैं आपके सामने बड़े अदब के साथ उस मसले को उठाने की जुर्रत कर रहा हूं, हाउस मुझे क्षमा करेगा ।

शास्त्री जी की मृत्यु के बाद जब उनका शरीर आया तो फूलों से ढका हुआ था । ईश्वर जानता है मेरा दिल उस समय कैसा था । मैं उनके शरीर को देख नहीं पाया, मुंह को देख नहीं पाया, हिम्मत भी नहीं पड़ती थी । सांयकाल जब लोगों ने उनके शव को अपार जनता के दर्शन के लिए रखा तो मैंने देखा कि उनका चेहरा स्याह पड़ गया था, बड़ी चिन्ता हुई, लेकिन समय ऐसा था कि किसी से कहने की हिम्मत नहीं पड़ी और न ही ऐसा विश्वास हो सकता था कि ऐसे सज्जन आदमी के विषय में, जिसे लोग अजात-

शत्रु कहते थे, कोई कुदृष्टि करेगा, ऐसा ख्याल नहीं था लेकिन आज जो बहुत सी बातें देखने को मिली और सुनने में आईं वे मुझे मजबूर करती हैं कि मैं इस मसले को आपके सामने पेश करूं। मुझे खेद है कि इसको कालिंग अटेंशन के रूप में पेश किया जाय उसकी अनुमति नहीं मिली, यह समझा गया कि यह इतना इम्पारटेंट नहीं है, लेकिन मेरे और मित्रों के कहने से इसको हाफ-एन-अवर-डिस्कशन के रूपमें रखने की अनुमति मिल गई।

थोड़ी सी बातें जो मैं जानता हूं उनको पहले कहना चाहता हूं। उसके बाद जो स्टेटमेंट स्वर्ण सिंह साहब ने दिया था और बाद को जो सवाल-जवाब लोकसभा में हुए थे उनके बारे में जिक्र करूंगा। मैं यह कहना चाहता हूं कि जो बयान दिया गया कि शास्त्री आए थे दरवाजे के पास, जो पड़ोस में उनके आदमी बैठे हुए थे उनको बुलाया, यह गलत है। दरवाजा बन्द था, आवाज उनकी पहुंच नहीं सकती थी और जो मुझे मालूम हुआ है वह मैं कहना चाहता हूं—कोई इन्क्वायरी कर ले—कि वे आए उठ कर और वहीं गिर पड़े और फिर बाद को उनके बगल के जो आदमी थे बैठे हुए उन लोगों ने उनको उठा कर चारपाई तक पहुंचाया। यह कहना बिलकुल असत्य है कि वहां टेलीफोन था। मुझे बड़ा दुख हुआ जब मैंने उस समय के दिए हुए बयान को पढ़ा। मैं उसमें से उद्धरण पढ़ता हूं—

"Apart from the two telephones for internal and international calls fitted in the P. M.'s suite, there was also a third telephone with a buzzer which could be activated by simply lifting the receiver. This instrument was available for the P. M.'s use to call any member of his personal staff or the doctor in case of need."

जब पूछा डा० राम मनोहर लोहिया ने कि उनके पास टेलीफोन नहीं रखा गया था, फोटो में नहीं दिखलाई पड़ा तो जवाब स्वर्ण सिंह ने दिया कि मैंने कहा था कि स्वीट में था, बेड के सामने नहीं था, दूसरा सेन्टेन्स अलग करके क्यों रखा गया। मैं भी सुनता था, मेरे मन पर यह प्रभाव पड़ा जो तीसरा टेली-फोन था एक्टीवेट होने वाला, जो उनको एवेलेबिल था, वर्डस ये हैं :—

"There was also a third telephone with a buzzer which could be activated by fim-ply lifting the receiver. This instrument was available for the P. M.'s use to call any member of his personal staff or the doctor in case of need."

इससे मेरे दिल पर, सबके दिल पर यह प्रभाव पड़ा और इसी वास्ते सवाल पूछा। इस तरह का जवाब क्या लोगों को मिस्लीड करने के लिए था? एक चीज होती है करैक्ट वर्ड कह देना कि यह तो मैंने नहीं कहा, लेकिन ऐसा इम्प्रेशन देना मैं समझता हूं उस अजातशत्रु प्राइम मिनिस्टर के प्रति महापाप है। इससे छोटा और कोई लफ्ज मैं इस्तेमाल नहीं कर सकता। उनकी उस दिन की दिनचर्या क्या थी? रिसेप्शन हुआ, रिसेप्शन में सब लोग गए थे। दूसरी बात, रूसी लोगों ने सबके लिए नान-वेजीटेरियन चीजों का प्रबन्ध किया था। शास्त्री जी के सामने सिर्फ केश्यू-नट्स और मूंगफली थी। वह चीज उन्होंने थोड़ी बहुत खाई। नुकसान की चीजें वे खाते नहीं थे और वहां किसी चीज का प्रबन्ध नहीं था वेजीटेरियन्स के लिए। मैं यह पूछना चाहता हूं—हमारे अफसरों और वहां के लोगों से पूछा जाय—कि रिसेप्शन के बाद किन-किन लोगों ने, जो यहां से गए थे वोदका शराब पी थी या नहीं और वे कितनी हैसियत में थे उनकी देखभाल करने के लिए। फिर मैं पूछना चाहता हूं कि इसके बाद जब वे ले जाए गए तो क्या उपचार किया गया? डा० साहब कहते हैं रिपोर्ट में कि जब उन्होंने कम्पलेन किया कि हमारी सांस फूल रही है—मैं भी हृदय का रोगी हूं, मैं भी जानता हूं कि कार्डियाक एस्थमा क्या होता है, आदमी उठ नहीं सकता—तो उनको इन्ट्रामस्कुलर इंजेक्शन एक दवा है मेप्टौटिन सल्फेट 15 मिलीग्राम, वह दिया गया, जब उनकी हृदय

[श्री टी० एन० सिंह]

की गति प्रायः बन्द हो गई थी, ब्लड प्रेशर निल था। ऐसी हालत में मेरे भाई भी हृदय की गति बन्द होने से मर चुके हैं। मैं जानता हूं डाक्टर आता है, हमेशा इन्ट्रा-वीनस इन्जेक्शन देता है, नस खोज कर दवा देता है, जिससे खून में पहुंच जाय। जो इन्ट्रा-मस्कुलर इन्जेक्शन दिया जायगा वह घंटों पड़ा रहेगा, वह सिस्टम में जायगा ही नहीं। मैं पूछता हूं कि कैसे यह दवा दी गई। इसमें लफ्ज लिखा हुआ है इन्ट्रा-मस्कुलर—

"With the help of the gentleman mentioned above the doctor put the Prime Minister in a reclining position, gave him intra-muscular injection of MEPTHEN TIN SULPHATE", etc.

मेरे दो भाई हृदय रोग से मर चुके हैं। इन दोनों भाइयों के समय मैंने देखा कि डाक्टर आया तो उसने उनका सिर नीचा कर दिया, पैर ऊपर कर दिए ताकि ब्लड पहुंचे। रेक्लाइनिंग पोजीशन में तो ऐसा हो नहीं सकता, ऐसा कोई नहीं करता लेकिन उनको इस तरह से रखा गया। मेरा यह चार्ज है कि वह मर गये और इंजेक्शन बाद को दिये गये। एक बात और बताऊं। जो डाक्टर आये वहां से, जिन्होंने मरने के बाद उनको देख उनमें डाक्टर एरेमेको भी थीं। यह बेचारी आयी थी और उसने देखा था। उसने उस मेडिकल सर्टिफिकेट पर दस्तखत तक नहीं किया।...

श्री राजनारायण (उत्तर प्रदेश) : करने से इन्कार किया।

श्री टी० एन० सिंह : यह देखना है, लेकिन अटेंडिंग फिजीशियन के दस्तखत न हों तो दूसरे फिजीशियन्स के दस्तखत के मायने क्या होते हैं यह देखने और समझने की बात है। इस के बाद अगर मुझे मौका मिलेगा और अगर देश के आदमी जागेंगे और सचमुच में अगर इस गवर्नमेंट में इतनी शक्ति और बल हो, हिम्मत हो कि इस की इंक्वायरी करा दे तो मैं साबित करने के लिए तैयार हूं कि वह कैसे लाये गये और कैसे पहुँचाये गये। वह मर चुके थे। इसके बाद मैं एक बात और कहना चाहता हूं खास तौर से और वह यह है कि शास्त्री जी बड़े रिलैक्स थे। पिछली रात साढ़े तीन बजे तक उनको काम करने दिया गया। साढ़े बारह बजे रात को आ कर एक आदमी सोता है और उसमें यह कहा गया है कि एक बज कर 20 मिनट पर वह आये और अपने दरवाजे के सामने खटखटाया, लोगों से कहा कि हमारी दवा दो। आप को आश्चर्य होगा जानकर कि उन को मृत्यु हो जाने के बाद वहां यह राय हुई कि शास्त्री जी के परिवार को एकाएक यह खबर न दो कि उन की मृत्यु हो गयी है। पहले यह खबर दो कि वे बहुत बीमार हैं। पहला टेलीफोन उन के पास आया कि शास्त्री जी बीमार हैं। हृदयगति का उनको रोग हो गया है और वह क्या समय था? वह समय था एक बज कर दस मिनट का। मैं जानता हूं उस पबिार को। एक बज कर बीस मिनट पर कहा जाता है कि ऐसा हुआ। उस टेलीफोन के आने में एक दो मिनट लगे ही होंगे, लेकिन पहला टेलीफोन आता है कि वह बीमार हैं, 1 बज कर 10 मिनट पर और 1 बज कर 20 मिनट पर या 22 मिनट पर यह टेलीफोन आया कि वह इस दुनिया में नहीं हैं। इस पर किस को विश्वास होगा। इस बात को अपने कैसे देखा? यह समझने की बात है। इसके बारे में मैं डिमांड करता हूं कि जो बातें तालमेल में नहीं हैं उनके कारण जरूरी है कि इस की इंक्वायरी की जाय कि आखिर उन की मृत्यु कैसे हुई और क्यों हुई। लोगों ने इसके लिए कहा, हमारे साथी मित्रों ने कहा, दूसरों ने कहा और गांव-गांव में लोगों ने कहा कि सुनते हैं कि शास्त्री जी का बदन काला पड़ गया था। यह सब ने कहा। मुझ को हिम्मत नहीं पड़ती कि मैं कहूं कि क्यों काला पड़ गया था। किसी डाक्टर ने यह भी कहा कि हो सकता है कि एकाएक हृदयगति बन्द हो जाने से जैसे ब्लड कहीं कहीं रुक जाता है तो हो सकता है कि उसके कारण बदन काला पड़ गया हो। मैं डाक्टर नहीं,

मैं अधिकारी व्यक्ति नहीं इस बारे में कोई राय जाहिर करने के लिए, लेकिन इतना जानता हूं कि पाकिस्तान हमारा कोई मित्र देश नहीं है। यह भी जानता हूं कि पाकिस्तान की लड़ाई के बाद रूस के साथ जो हमारे मैत्री संबंध थे वह कुछ हल्के से पड़ गये थे। यह भी जानता हूं कि शास्त्री जी को ठहराने के लिए एक अलग जगह पहले तय की गयी थी। उनको वहां से हटा कर बिला में अलग रखा गया डाक्टरों से और सब आदमियों से दूर। वहां बजर का भी इंतजाम नहीं था। आखिर में टेलीफोन लगाया गया। कोई घंटी तो रखता ही है। आदमी को बिस्तर पर एक ग्लास पानी की जरूरत हो तो उस के लिए कम से कम घंटी तो होनी ही चाहिए। लेकिन वहां घंटी तक नहीं थी और कहते हैं कि अच्छा इंतजाम था। टेलीफोन नहीं था, बजर नहीं था। डाक्टर साहब के पास आक्सीजन पहले नहीं थी। मैं भी कुछ समय बीमार रह चुका हूं। डाक्टरों के पास आक्सीजन हमेशा रहती है, लेकिन वहां पर आक्सीजन का कोई प्रबंध नहीं था।

एक माननीय सदस्य : होटल में था।

श्री टी० एन० सिंह : होटल में था, वहां नहीं था। फिर शास्त्री जी रात को सोने के पहले थोड़ा सा दूध पीते थे और उसके साथ ईसबगोल और एक गिलास पानी लेते थे। वह खाने के साथ पानी पीते थे और उसके बाद एक गिलास पानी के साथ ईसबगोल लेते थे। मेरा ख्याल है कि खाना खाने के बाद सब आदमी चले गये हैं साढ़े 12 बजे या सवा बारह बजे, वक्त का सामंजस्य बाद में करना होगा। 12 बजे के बाद खाना खाया है और फिर उन्होंने दूध पिया है या पानी पिया है और उसके बाद ही उनका देहान्त हो जाता है। कैसे एकाएक देहान्त हो गया जब कि वे बड़े रिलैक्स्ड थे, बड़े प्रसन्न-चित्त थे। डाक्टर कहते थे कि उनको कोई खतरा नहीं था। एकाएक क्यों देहान्त हो गया।

एक माननीय सदस्य : किस ने पिलाया दूध?

श्री टी० एन० सिंह : अब वह दूध वहां रखा था और यह कहा जाता है कि रूस से, मास्को से हमारा एक कुक आया था जोकि शास्त्री जी का कुक यहां से गया था रामनाथ, लेकिन एक कुक आया था। उस ने भी कुछ इंतजाम किया था। उस कुक का कहीं कोई पता नहीं। कहां है वह आदमी? न वह रूस में है और न हिन्दुस्तान में है। कहीं और ट्रान्सफर कर दिया गया। मैं नहीं जानता कि किसने कहा, लेकिन कहा कि कभी इसकी गहराई में गये हो। संदेह होता है। बड़ा दुख होता है कि मैं अपने संदेह को कहने की हिम्मत कर रहा हूं। कहने की हिम्मत नहीं पड़ती। लेकिन जी नहीं मानता। चारों तरफ जहां जाता हूं गांव-गांव में लोग कहते हैं कि तुमने क्या किया। अब तक इस बात को उठाया क्यों नहीं? अगर मैं पुनः चुना न गया होता तो मेरा इस राज्य सभा में आज आखिरी दिन होता। आज आप की कृपा से इस प्रश्न को उठाने की अनुमति मिल गयी है इस लिए मैं इस प्रश्न को यहां उठाने में सफल हो गया हूं। बहुत सी बातें हैं। मैं एक जिम्मेदारी से बात करना चाहता हूं, किसी पर आरोप लगाने की हिम्मत नहीं होती। लगाऊंगा समय पर। मैं कहता हूं कि समय आने पर रुकूंगा नहीं, लेकिन अभी समय नहीं आया है। आज हमारी सरकार उस आदमी को जिस ने हमारे देश के सिर को ऊंचा किया, जिस ने पहले पहल सैकड़ों वर्ष के बाद इस हारे हुए देश में एक नया प्राण दिया कि हम भी दुश्मनों को हरा सकते हैं उस आदमी को हम इतनी जल्दी भूल गये। चारों तरफ से मालूम होता है कि ऐसा प्रयास किया जाता है कि कोई उसका नाम भी न ले। यह सब देखते-देखते मेरे हृदय में कष्ट होता है। मैंने इस वास्ते आप के सामने इस प्रश्न को उठाने की कोशिश की है। यह मैं कह देना चाहता हूं, रुकता हूं, जरा मैं बहुत संकोच करता हूं इन सब बातों को कहने में लेकिन कह देना

[श्री टी० एन० सिंह]

चाहता हूं कि जो उस समय के सिक्योरिटी स्टाफ के और और लोग थे सुनते हैं वे बड़े-बड़े अफसर हो गये हैं। यह सच है। अगर सच है तो सफाई से इसका जवाब होना चाहिये।

आज चार वर्ष हो गये लेकिन याद नहीं कोई भी। मैंने आवेश में कुछ कह दिया हो तो क्षमा कीजियेगा लेकिन मैं दरख्वास्त करता हूं और अगर मेरी दरख्वास्त नहीं सुनी जायगी तो मैं आज इस उम्र में—बाल सफेद हो गये हैं, बूढ़ा हो गया हूं, ज्यादा चल नहीं सकता लेकिन गांव-गांव घूमूंगा, अपनी जनता से मांग करुंगा कि इसके बारे में जांच की जाय, इस तरह से इसको दबाना उचित नहीं है। मैं जानता हूं गवर्नमेंट का क्या जवाब होगा, उस तरह का जवाब होगा जो स्वर्ण सिंह जी ने दिया था। मैं बहस कर चुका हूं, अभी सवाल पूछा गया था जिसके ऊपर यह कह दिया गया कि जवाब दे दिया गया है, यह है सरदार स्वर्ण सिंह का जवाब, यह है छपी किताब, इसमें स्वर्ण सिंह साहब का स्टेटमेंट है लेकिन जो डाक्टर का सर्टीफिकेट है वह नहीं छपा, बाद में जवाब में उन्होंने कहा है कि यह स्टेटमेंट है, डाक्टर का सर्टीफिकेट का पार्ट वह निकाल दिया गया, क्योंकि डाक्टर का सर्टीफिकेट जो है, स्टेटमेंट जो है दोनों को लाइनों के बीच में पढ़ा जाए तो उसमें जो बातें विरोधी हैं, कनफ्लिक्टिंग हैं, वह साफ देख ली जाएंगी। मैं आज इतने दिनों के बाद जब पढ़ने लगा तो मुझे यह इंट्रा-मसकुलर वगैरह देख कर के खुद ही बड़ा ताज्जुब हुआ। यह तो स्टेटमेंट उस दिन पढ़ा नहीं गया था, लोक सभा में मैं मौजूद था, खाली स्वर्ण सिंह का स्टेटमेंट पढ़ दिया गया और यह टेबिल पर रख दिया गया। और सच कहता हूं मेरा दिल ऐसा बेकाबू था कि मैं अपना दिमाग भी नहीं लगा सका। आज तो जनता की प्रेरणा के कारण मैंने सोचा था कि इस सभा को छोड़ने के पहले कम से कम यह अपना कर्म धर्म कर जाऊं। आज जो कि मेरा इस सत्र का आखिरी दिन रहा है मैंने इसको उठाने की कोशिश की है भगवान की दया से, मित्रों के स्नेह से, मैं फिर आगे भी इस सभा का मेम्बर रहूंगा और अब तो इस बात को मैं आगे बढ़ाता रहूंगा, छोड़ूंगा नहीं, चलाऊंगा।

तो मैं बड़े अदब के साथ दरख्वास्त करता हूं कि आसानी से यह न कह दिया जाय कि अब इंक्वायरी की कोई जरूरत नहीं है। अगर आपको यह जवाब देना ही है तो आज के लिये मेहरबानी कर के रुक जाइये, ऐसा जवाब मत दीजियेगा।

मेरी यह डिमांड है, मेरी यह मांग है कि जांच की जाय और तरह-तरह की अफसरों की बहानाबाजी में इसको टालने की कोशिश न की जाय। आज मेरा दुर्भाग्य है कि इस प्रश्न को मैंने उठाया और चव्हाण साहब जो उनकी मृत्य के समय साथ थे आज उन्होंने यह उचित नहीं समझा कि यहां मौजूद रहें जिसमें साधिकार रूप से कुछ जवाब दे सके। मेरी भी कुछ हैसियत है, मेरे वह साथी थे, बारह वर्ष की उम्र से वह साथी था और आज वह मर गया और "None so poor to do him reverence." यह हालत है। उनकी स्मृति को जिस तरह से दबाया जा सके दबाया जा रहा है, इसका मुझे महान कष्ट है।

तो और तो कुछ नहीं कहूंगा, बड़े अदब के साथ राज्य-गृह-मंत्री से कहूंगा कि हां उनको अधिकार है जवाब देने का लेकिन खुदा के लिये अभी एकदम से उठ कर के ऐसा जवाब न दीजिये कि गवर्नमेंट ने फैसला कर लिया है कि कोई जांच नहीं होगी। यही रिक्वेस्ट कर के, यही प्रार्थना कर के मैं बैठता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Minister.

SHRI T. N. SINGH : Shri Rajnarain wants to speak.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Only those who have given names.

SHRI KRISHAN KANT (Haryana) This is an important question.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Let the Minister speak.

गृह-कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) : उपसभापति जी, यह सचमुच में ज्यादा अच्छा होता यदि श्रीमान चव्हाण स्वयं आ कर इस प्रश्न का और इस बहस का उत्तर देते क्योंकि वे स्वयं ताशकंद में उस वक्त मौजूद थे जब कि यह दुर्घटना हुई थी ।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, इसको टाल दिया जाय दूसरे दिन के लिये ।

श्री विद्या चरण शुक्ल : मुझे कहने दीजिये । उनका यहां आने का भी इरादा था, वह आने वाले थे परन्तु चूंकि दूसरे सदन में गृह मंत्रालय की डिमांड चल रही है और उन्हें शायद अभी वहां जवाब भी देना पड़े इसलिये वह नहीं आ सके । मुझे इसमें कोई भी आपत्ति नहीं होगी कि आज जो बहस हुई है इसको स्थगित करके कुछ आगे समय के लिये ले जावें और उसका जवाब वह स्वयं दें । इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है । यदि आप यह उचित समझें तो आप यह कर सकते हैं और मैं समझता हूं कि ज्यादा अच्छा होगा कि बजाय इसके कि हम लोग वही पुरानी बात कहें, हमारे पास जो तथ्य हैं वह हम बताएं, यह अच्छा होगा कि चव्हाण साहब स्वयं अपने व्यक्तिगत ज्ञान से—वह स्वयं वहां मौजूद थे—इस बात का जवाब दें । वैसे तो मैं साधारण रूप से यह जरूर कह सकता हूं कि शास्त्री जी के सम्बन्ध में जितना प्यार, जितना सम्मान हमारे ठाकुर साहब के हृदय में है उतना हम सब के हृदय में भी है, हम उनको गौरव की दृष्टि से, उनकी स्मृति को, देखते हैं और कुछ उनकी याद करके गौरवान्वित होते हैं और हर तरह से हमी उनको इस देश का एक महान सपूत मानते हैं । यह बात अलग है कि उनका जो व्यक्तिगत सम्बन्ध उनके साथ था, जिस तरह का व्यक्तिगत प्यार उनके साथ था उसका सौभाग्य बहुत लोगों को, दूसरे लोगों को नहीं मिला था, पर जहां तक उनके प्रति सम्मान, उनके प्रति गौरव रखने और उनकी याददाश्त के प्रति श्रद्धा रखने का सवाल है मैं समझता हूं कि हमारे भारतवर्ष में सबके मन में ऐसी बात है और खास करके ऐसे लोगों के मन में जिन्हें उनके साथ काम करने का सुअवसर मिला था ।

तो जहां तक कि यह बात कही जाय कि उनकी कोई बात दबाई जाती है या छिपाई जाती है या गल्ती को दबाने की कोशिश की जाती है तो मुझे यह नहीं लगता कि यह बात कोई जानबूझ कर करता होगा । यह हो सकता है कि कोई तथ्य ठीक से सामने न आयें हों, यह भी हो सकता है कि कोई तथ्यों का जोड़-तोड़ ठीक से न होता हो, कुछ चीजें ऐसी रह गई हों जिनके बारे में स्पष्ट रूप से कोई चीज सामने न आई हो, यह सब मैं मान सकता हूं, मगर यह बात मैं नहीं मानता कि किसी ने जानबूझ कर कोशिश करके कोई चीज छिपाने की, दबाने की कोशिश की । किसी को इसमें क्या रुचि हो सकती है ऐसा करने में ?

श्री राजनारायण : जब माननीय मंत्री जी ने खुद स्वीकार किया है कि चव्हाण साहब जवाब दें तो अच्छा है तो फिर आगे क्यों इसको बढ़ा रहे हैं?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : I have that in mind. Tlie House is sitting il" Mr. Chavan can come here.

श्री विद्या चरण शुक्ल : इसको आप बाद में तय करलें, मुझे थोड़ा बोलने दें ।

मैं केवल यह कह रहा हूं कि उसमें कोई दबाने की, छिपाने की कोई बात नहीं है और इसलिये इस तरह की शंका यदि किसी के मन में हो तो वह शंका मन से निकाल देनी चाहिये । मैं इस बात को भी मानने को तैयार हूं कि हो सकता है कि वहां कुछ किसी की गल्तियां हों पर ऐसा नहीं लगता जो, श्रीमन्, हमको ज्ञान है उसके अनुसार कि उन्होंने जानबूझ कर कोई गल्ती की हो, जानबूझ

[श्री विद्या चरण शुक्ल]

कर कोई गड़बड़ी की हो। जैसा कि हमारे ठाकुर साहब ने एक बेयरे का नाम लिया, जो मास्को से आया था, जान मुहम्मद, उसका उन्होंने कहा, उन्होंने पूछा कहां है। हमने इसका पता भी लगाया, वह पहले मौलाना अब्दुल कलाम आजाद के साथ सालों रहा, अच्छी तरह से काम किया, एक भी शिकायत उसके खिलाफ कभी नहीं आई, जब ताशकंद में आया भी तो वह चूंकि सामिष भोजन बनाता था इसलिये वह शास्त्री जी का काम नहीं करता था। शास्त्री जी के साथ जो आदमी गया था वही काम करता था। यह बात ठीक है, वह मौजूद था और हमें मालूम है, वह आदमी कहां मौजूद है। वह दिल्ली में ही मौजूद है, सब काम कर रहा है, अभी भी उसके खिलाफ कोई शिकायत नहीं है। तो उस ग़रीब आदमी के खिलाफ किसी तरह का ऐसा विचार रखना मैं तो नहीं समझता कोई ठीक बात होगी। सेक्योरिटी वाले भी थे, उन्होंने भी अपना काम बहुत अच्छी तरह से किया और वे लोग वहां पर शास्त्री जी का इतना सम्मान करते थे, इतना प्यार करते थे कि मैं समझता हूं जितना हम लोगों को दुख हुआ होगा, उससे ज्यादा उनको दुख हुआ होगा क्योंकि वह दिनरात शास्त्री जी के सान्निध्य में, उनके सम्पर्क में रहा करते थे, शास्त्री जी की सेवा करते थे। जो भी शास्त्री जी के साथ रहता था उसको उनका प्यार मिलता था वह भी उनको प्यार करने लगता था, हमेशा के लिये उनका हो कर रह जाता था। इसलिये उनके ऊपर हम शक करें मैं नहीं समझता यह ठीक होगा। उसी तरह से डाक्टर साहब की भी बात है। डा० चुग, उनके बारे में भी हम इस बात को जानते हैं कि शास्त्री जी के साथ उनका कितना व्यक्तिगत लगाव था। शास्त्री जी के साथ उनका वैसे तो डाक्टर के रूप में संबंध था ही, डाक्टर के रूप में उनके साथ आता जाता रहता था, लेकिन व्यक्तिगत रूप में भी उनका लगाव शास्त्री जी के साथ इतना हो गया कि वह भी उसको अपना व्यक्तिगत आदमी मानते थे। इसलिये किसी वक्त भी उनका साथ न छोड़ने पर, क्योंकि दिन में एक बार दो बार वह उनकी जांच करते थे, अक्सर शास्त्री जी को यह कहना पड़ता था कि आप बहुत फसिंग करते हैं, हमारे आसपास रहकर हमें तंग करते हैं। तो ये सब बातें देखने से यह लगता है कि जान बूझ कर किसी ने ग़लती की हो ऐसी बात नहीं है। यदि ऐसी कोई बात सामने आती जिसके बारे में जांच पड़ताल करनी है तो मुझे इस बात का कोई शक नहीं कि उसके बारे में जांच पड़ताल होनी चाहिये लेकिन मैं कहना चाहता हूं ठाकुर साहब से कि ऐसी बातें बतायें जिसमें हम जांच करवाना चाहते हैं और यदि उनको कोई संतोष ...

श्री लोकनाथ मिश्र (उड़ीसा) : यह जो आपने बोला कि वह जिसने दूध दिया था वह लापता था, वह दिल्ली में है। क्या वह आदमी दिल्ली में है जिसने मिल्क का ग्लास दिया था?

श्री विद्या चरण शुक्ल : जो सूचना हमें मिली है इस व्यक्ति ने वह दूध नहीं दिया था। जहां तक हमें सूचना है, उनका जो व्यक्तिगत नौकर उनके साथ गया उसी के द्वारा शास्त्री जी को खाना भी दिया जाता था, वही उनकी देखभाल करता था। यदि ऐसी कोई बात हो जिसमें जांच पड़ताल कराना वह आवश्यक समझते हैं, यदि हम उनको संतोष नहीं दे सके कि वह बात कैसे हुई क्या हुई, तो हम यह कभी नहीं कह सकते कि यह जो उनकी इच्छा है, यह जो आवश्यकता है, वह पूरी नहीं की जायेगी, ऐसा तो कहना भी नहीं चाहते, क्योंकि हम लोगों के मन में भी वैसी ही भावना है। हम ऐसी कोई बात नहीं करेंगे कि जिससे किसी के मन में ऐसा शक पैदा हो। इसलिये मैं कहूंगा कि जब हम इस बारे में बात कर लें और सब तरह से सोच समझ लें, उनके मन में कभी यह शक न आए, कि हम अपने कर्त्तव्य में विमुख हैं, तो हमको जांच पड़ताल करने में जरा भी हिचक नहीं। पर हम यह चाहते हैं कि इसको ठीक से समझ लेना चाहिये कि जांच होनी चाहिये। यदि हमको संतोष

नहीं होता है तो हम जांच पड़ताल भी कर सकते हैं, इसमें कोई आपत्ति नहीं है। इसलिये मैं कहूंगा वे अपने मन को उद्विग्न नहीं होने दें और यह नहीं समझें कि वे अकेले हैं इस मामले में। हम समझते हैं कि इस सदन में और दूसरे सदन में भी ऐसे लोग हैं जिनका शास्त्री जी के साथ सम्पर्क है. . .

श्री टी० एन० सिंह : हम जानते हैं, देश हमारे साथ है।

श्री विद्या चरण शुक्ल : मैं सदन की बात इसलिये कह रहा था कि आज इस सदन में मामला उठा है। हम लोग सब इस मामले में आपके साथ हैं। ऐसी कोई शक की बात नहीं की जानी चाहिये कि जिससे यह संशय रहे कि कोई काम ठीक से नहीं हुआ, कोई चीज ठीक से नहीं हुई या किसी ने उसमें गड़बड़ की। इसलिये मैं अधिकृत रूप से यह कहना चाहता हूं कि हमें किसी भी चीज में कोई आपत्ति नहीं होगी। हम चाहते इस बात को हैं कि सब लोग इस बात को ठीक से समझ लें। वह हमारे देश के एक महान पुरुष थे, उनके लिये जो कुछ भी किया जा सकता था वह किया और अगर कोई ग़लतियां हुई तो वह अनायास ही जान बूझ कर नहीं किया गया और फिर जैसा हमें यहां जनमत मिला, अगर इस चीज की आवश्यकता हो, तो जैसा मैंने कहा हम कार्यवाही करने के लिये तैयार हैं।

श्री ब्रज किशोर प्रसाद सिंह (बिहार) : श्रीमन्, मैं एक बात जानना चाहता हूं। मैंने भी शास्त्री जी के शव को देखा था जब वह ताशकंद से लाये गये थे। शास्त्री जी के बहुत नज़दीक मैं भी रहता था। उनके शव को देखने से यह बिल्कुल साफ था कि उनकी चमड़ी में और चेहरे पर बड़ी स्याही सी आ गई थी। आम तौर से जब किसी की मृत्यु होती है तो एक तरह का पीलापन आता है, जिसको कहते हैं पुर्दनी आ गई, लेकिन वह न होकर उनमें स्याह रंग चेहरे पर और चमड़ी पर आ गया था। तो क्या माननीय मंत्री जी इस बात को साफ कर सकते हैं कि यदि हार्ट के, हृदय के, अवरुद्ध हो जाने से कोई व्यक्ति मरता है तो ऐसी हालत में मेडिकल साइन्स क्या कहता है। यदि यदा कदा कहीं चमड़ी पर स्याही आ जाती तो मुझे संदेह नहीं होता। लेकिन इस बात की सफाई मुझे आज तक नहीं मिली है। इसलिये मुझे भी थोड़ा थोड़ा संदेह रहा है।

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं भी बहुत भारी दिल से इस समय कुछ प्रश्न पूछना चाहूंगा। क्या यह सही नहीं है कि डा० राम मनोहर लोहिया ने श्री लाल बहादुर जी के मृत्यु के कारणों के जांच की मांग की और उन्होंने सदन के अंदर भी और सदन के बाहर भी इस चीज की मांग की? हम लोग जो लोहिया जी के निकट बैठते हैं. . .

SHRI P. C. MITRA (Bihar) : On a point of order. The Minister says that the Home Minister himself will come and give replies. Then it would he better as other Members wiH have tbe right to speak, ff he speaks now. then we will have no right t< fications at tliat, time.

श्री राजनारायण : नहीं नहीं, होगा, होगा। श्रीमन् डाक्टर लोहिया ने. . .

उपसभाध्यक्ष (श्री अकबर अली खान) : राजनारायणजी. . .

श्री राजनारायण : देखिये बीच में हमको मत टोकिये। हम संसदीय प्रथा जानते हैं। डा० लोहिया ने लोक सभा के अंदर और लोक सभा के बाहर और जन सभाओं में बहुत ही सफाई के साथ कहा कि लाल बहादुर शास्त्री मरे नहीं, मारे गये, इसकी जांच करायी जाये। क्या यह सत्य नहीं है कि इसी सदन में दो बार, तीन बार, मैंने स्वयं श्री लाल बहादुर जी के निधन के कारणों की जांच की मांग की, लगातार मांग की। मुझे इस बात का थोड़ा सा ढाढ़स हुआ कि हमारे बुजुर्ग भाई टी० एन० सिंह जी भी इस सदन में इस आवाज को बहुत तेजी के साथ उठाये हैं। मैं पूछना चाहता हूं, क्या कारण है कि जो ई० जी० इमिन लेडी डाक्टर पहले थी जो तत्काल, खबर लगते

[श्री राजनारायण]

ही आई, रूस की थी वह, उसने हस्ताक्षर नहीं किया। हमारी पूरी जानकारी है, हमने मास्को से ली है, कि उसने इनकारा है। जब तक ई० जी० इमिन से जिरह न हो कि तुमने उस पर दस्तखत क्यों नहीं किया, दूसरा डाक्टर क्यों बुलाया गया, तब तक इसका राज़ खुलता नहीं है। इसलिये मैं इसका समुचित उत्तर चाहूंगा, चाहे वह चव्हाण साहब दें या कोई और साहब दें कि ई० जी० इमिन लेडी डाक्टर ने डाक्टरों की जो रिपोर्ट बनवाई गई उस पर हस्ताक्षर क्यों नहीं किया ? क्योंकि वह जानती थी क्या कारण है उनकी मृत्यु का, उसने अपने मौरल में, अपने डाक्टरी इटिकेट को बेचा नहीं, इसलिये उसने कहा मैं हस्ताक्षर नहीं करती।

दूसरी बात, क्या यह सत्य नहीं है कि लाल बहादुर शास्त्री जी के लिये पहले रहने की व्यवस्था दूसरी जगह थी और श्री टी० एन० कौल की सलाह मानकर दूसरे लोगों की सलाह मानकर उनको उस विला में लाया गया। यदि सत्य है, तो ऐसा क्यों किया गया। अभी भाई टी० एन० सिंह ने जो पढ़ा है उसमें बहुत बारीकी से लिखा है कि कमरा अच्छा था मगर छोटा था इसलिये रामनाथ जो लाल बहादुर जी के साथ वहां गया था वह बगल के कमरे में सोता था। इस देश का प्रधान मंत्री, वह प्रधान मंत्री जिसने देश की शर्म को बहुत दूर तक हटाया, पाकिस्तानी सेनाओं को पराजित किया, उसके कमरे के बगल में जो सर्वेन्ट था वह कहां गया इसका भी कारण बताया जाना चाहिये कि ऐसा क्यों हुआ।

दूसरी बात, क्या श्री कौल साहब की वह चाइनीज गर्ल जिससे उनकी दोस्ती थी उन दिनों में वहां थी, मास्को में, या नहीं थी? यह भी एक राज है।

श्री मोहन लाल गौत्तम (उत्तर प्रदेश) : वह चाइनीज गर्ल कहां है ?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AK-BAR ALI KHAN) : Let him be serious piease. Let him ask for his clarifications.

SHRI MOHAN LAL GAUTAM : When he said a Chinese girl in Moscow, I wanted to ask^bim whether she was in Moscow OT Tashkent.

श्री राजनारायण : मास्को के बारे में ही लगा लीजिये क्योंकि हम इस सवाल को इसलिये पूछ रहे हैं कि इसका दूर तक कनैक्शन है। इसलिये हम पूछ रहे हैं कि कुछ दिनों से वहां रहती हो, दो दिन पहले रह रही हो या बाद में रही होगी। ताशकन्द में रही हो या उसके इर्दगिर्द रही हो।

दूसरी बात यह है कि क्या उन्हीं दिनों डा० धर्म दत्त तेजा, जयन्ती शिपिंग वाला भी वहां था या नहीं था। देखिये केवल सरकार का जवाब आया है कि तेजा नाम का था और वह धर्म तेजा नहीं था। हमारी जानकारी है कि धर्म दत्त तेजा वही तेजा था। सरकार लीपा-पोती कर रही है इसका उत्तर गलत दे कर के।

इसी के साथ-साथ अब मैं यह चाहता हूं कि हमको बिल्कुल सही सही खबर बतलाई जाय कि शास्त्री जी की मृत्यु कब हुई और किस समय पर हुई। मृत्यु का समय क्या था क्योंकि भाई टी० एन० सिंह ने बहुत सफाई के साथ कहा कि 1 बज कर 10 मिनट पर दिल्ली में लाल बहादुर शास्त्री जी के घर के लोगों को यह समाचार मिला टेलीफोन से कि श्री लाल बहादुर जी की तबियत खराब है और उन्हें हृदय का रोग है। फिर 1 बजकर 20 मिनट पर यह खबर आ गई कि वे गिर गये हैं और करीब डेढ़ बजे उनकी मृत्यु हो गई। यह जो समय बतलाया गया है उन दोनों में आपस में परस्पर विरोध है। यह हमारे मन में शंका ही नहीं है बल्कि धारणा बन गई है कि श्री लाल बहादुर शास्त्री जी एक षड़यंत्र द्वारा मारे गये हैं।

मैं चाहता हूं कि यह जो कौल साहब है, कपूर साहब है और जान मोहम्मद है, वही जान मोहम्मद जिनके बारे में यह कहलाया जाता है कि उन्होंने ही शास्त्री जी को दूध पिलाया था और जिस के बारे में आज पहली मर्तबा

मंत्री जी ने कबूला कि यह वही था और रामनाथ जो तमाम काम करता था वह भी खड़ा रहता था। मैं कहना चाहता हूं कि रामनाथ को हटाया गया। श्रीमती ललिता शास्त्री जी श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के साथ जाना चाहती थी लेकिन उन्हें नहीं जाने दिया गया और इसीलिए वह रामनाथ सेवक उनके साथ गया। श्रीमती ललिता शास्त्री जब नहीं गई तब रामनाथ सेवक गया जो बराबर उनकी सब चीजों को देखता था और समझता था तथा जो उनकी सब गतिविधियों से अवगत था। वह उनके साथ गया। मगर रामनाथ सेवक को उन तमाम सेवाओं को करने नहीं दिया गया जिसको करके शायद हो सकता था कि वे बच जाते। जान मोहम्मद के बारे में भी उस समय तमाम अखबारों ने लिखा कि उसने आखिरी दूध का गिलास दिया था और उसके बाद श्री लालबहादुर जी की मृत्यु हो गई थी। इसके बारे में मैं चाहूंगा कि अच्छी तरह से छिपाने के लिए नहीं और केवल कहने और न कहने के लिए जवाब न दिया जाये।

मुझे इस बात की खुशी है कि मंत्री जी ने इस बात का एहसास किया है कि यह एक अच्छी बात होती अगर श्री चव्हाण साहब इन सब बातों का जवाब देते क्योंकि वे वहां पर मौजूद थे।

उप सभाध्यक्ष (श्री अकबर अली खान): आज आप सवाल कर लें ताकि आज ही खत्म हो जाय।

श्री राजनारायण: आप हमारे सवालों को उनके पास भेज दीजिये। हम खत्म करने के लिए नहीं कह रहे हैं, नहीं तो हम बहुत बोल सकते हैं। मैं इसलिये बोल रहा हूं कि मेरे इन सवालों को श्री चव्हाण साहब के पास भेज दीजिये ताकि श्री चव्हाण साहब अच्छी तरह से स्टडी करें, छानबीन करें और और फिर उसके बाद इस सदन को सारी बातों से अवगत करायें तथ्य और सत्यों से।

तो मैं यह कहना चाहता हूं कि और लोगों को आप छोड़ दीजिये, लेकिन मुझ गरीब को क्या यह सरकार अवसर प्रदान करेगी कि श्री कौल साहब से जिरह कर सकूं, श्री कपूर साहब से जिरह कर सकूं और जान मोहम्मद से जिरह कर सकूं। हम चाहते हैं कि ये लोग हमको उपलब्ध कराये जायं ताकि हम इनके साथ जिरह कर सकें और सत्य पर पहुंच सकें क्योंकि शास्त्री जी की जिस अवस्था में मृत्यु हुई है वह एक बहुत ही बड़ा गोलमाल मामला है जो आज तक रहस्य बना हुआ है।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि श्री शास्त्री जी के पास एक थर्मस था जिसमें वे दूध और पानी रखा करते थे। वह थर्मस कहां है और उस थर्मस की अब तक क्यों नहीं जांच कराई गई।

श्री टी० एन० सिंह: उनकी डायरी भी गायब हो गई।

श्री राजनारायण: वह हमारा पहला प्रश्न था। आप जानते हैं कि श्री शास्त्री जी विद्यापीठ में पढ़े थे। बनारस, रामनगर, मिर्जापुर, ये सब एक दूसरे से लगे हुए हैं। श्री टी० एन० सिंह 12 सालों से उनके साथ हैं और हम लोगों का इतना लगाव हो गया था, छोटे-छोटे हम लोग थे और हमें शास्त्री जी की बहुत सी आदतों के बारे में जानकारी थी। शास्त्री जी पुराने जमाने की परम्परा में पले हुए थे और राष्ट्रीय स्वातंत्र्य संग्राम में आये। वे जेल में रहते हुए भी अपनी डायरी लिखा करते थे। शास्त्री जी की एक डायरी थी। वह डायरी लिखते थे और वह डायरी कहां है? मैं जानना चाहता हूं कि शास्त्री जी की निजी डायरी कहां है और इसकी जानकारी सदन के सम्मानित सदस्यों को कराई जाय।

श्रीमन्, ये प्रश्न मोटे-मोटे रख दिये हैं। यूं तो हमारे पास पूछने के लिए बहुत-सा मसाला है। जब हमारे इन प्रश्नों का जवाब श्री चव्हाण साहब देंगे तब फिर और प्रश्नों के संबंध में आपकी इजाजत से और सम्मानित सदस्यों की जानकारी के लिए हम श्री चव्हाण

[श्री राजनारायण]

साहब की खिदमत में पेश करेंगे। मगर हमारा निश्चित मत है कि श्री शास्त्री जी को षड़यंत्र का शिकार बनाकर इस दुनिया से उठवाया गया। सरकार के चेहरे पर एक कालिख है और सरकार का यह कर्तव्य है कि वह इस संबंध में एक इन्क्वायरी कमिशन बिठलाये और उस इन्क्वायरी कमिशन द्वारा जो सरकार के चेहरे पर कालिख लगी हुई है उसे दूर करने की कोशिश करे।

उप सभाध्यक्ष (श्री अकबर अली खान) : आप क्यों घबरा रहे हैं?

श्री राजनारायण : हमारे मंत्री जी ने एक बात कह दी। श्री विद्या चरण शुक्ल जिनको मैं अच्छी तरह से जानता हूं और उनके दिल में जो मुहब्बत है मैं चाहता हूं कि वह कायम रहे। वे डा० चुग के बारे में कह रहे थे। डा० चुग वही डाक्टर हैं जिसने डा० राम मनोहर लोहिया की हत्या कराई थी। वह बड़ा भला है, यह कहते हुए शर्म नहीं आती है। श्रीमन्, इन सब बातों को सुनकर और जानकर तबियत और दिल फट जाता है। डा० लोहिया की एक रहस्यमय मृत्यु हुई थी और उस समय से हम डा० चुग को जानते थे। उनके बारे में नर्सों के बयान हमारे पास हैं। ये कह रहे हैं कि डा० चुग बड़े भले आदमी हैं, बड़े अच्छे हैं। डा० चुग के काले कारनामे इस देश को और जग के लोगों को जाहिर हैं। इसलिए चूंकि मंत्री जी ने डा० चुग के बारे में कुछ कह दिया, इसलिए मुझे भी कहने दिया जाय। डा० चुग का आस्तीन जो है वह बिल्कुल साफ नहीं है। उनका हाथ साफ नहीं है। उसके बारे में अनेक चीजें हैं जो बाद में आवेंगी।

श्रीमन्, इस देश में आज हो क्या रहा है। जब हमारे मित्र श्री टी० एन० सिंह बोल रहे थे तो तब हम उनके दर्द को समझ रहे थे। मैं चाहूंगा कि हम लोगों के दिल के दर्द को समझा जाय कि आज हमारे देश में क्या हो रहा है। क्या आज हमारे देश में राजनीतिक हत्याएं उच्चतम स्तर पर साजिश के साथ नहीं कराई जा रही हैं। इस चीज को भी देखा जाना चाहिये और मैं आप से अदब के साथ कहना चाहता हूं कि आध घंटे या 15 मिनट की बहस या सवाल जवाब करने से यह सवाल हल होने वाला नहीं है। हमारे भावों को अच्छी तरह से सुना जाना चाहिये कि किन-किन स्थितियों में और किस तरह से शास्त्री जी को इस दुनिया से उठवाया गया है। इस बारे में हम पूरी सफाई देना चाहेंगे कि उनका तेजा के साथ क्या संबंध था और तेजा उनके बारे में क्या कहता था और तेजा दूसरों से क्या कहता था, ये सारी बातें आयेंगी। इस बारे में कोई इन्क्वायरी कमिशन बिठलाया जाना चाहिये। आज तो सवाल यह है कि हम अपना रोना किस के सामने रोयें और किस के सामने कहें क्योंकि आज कोई सुनने वाला नहीं है। वह ताकत, वह शक्ति आवे जो हमारी बातों को सुनकर फैसला दे। हम आगे की बातों में नहीं पड़ेंगे, केवल इस अधिकार को रखते हैं कि वर मंत्री श्री चव्हाण साहब आयें और इन सवालों के बारे में अच्छी तरह से जवाब दें और इसके बारे में हम अपने और सवाल उनसे पूछेंगे।

SHRI M. P. BHARGAVA (Uttar Pradesh) : Mr. Vice-Chairman, there are certain questions which have to be fairly and squarely replied to by the Government. The first question is whether it is or it is not a fact that arrangements *were* made for Shastriji for his stay with the Indian Delegation at the hotel and whether all arrangements for a heart case had been made at that place in a special room constructed and designed for that particular purpose because the Russian Government knew that Shastriji was a heart patient.

Is it or is it not a fact that at the instance of the Ambassador in Russia a telegram was received by the Government of India that Shastriji should not be placed with other members of the Indian delegation and arrangement for him should be made in a particular villa near about the hotel? And where is that blessed telegram which was sent in reply by the Government of India to proceed with the arrangements for Shastri-ji's stay in that villa separately from the

Indian delegation? Then what has to be explained is where is Shastriji's personal diary, which he was in the habit of writing every day, and where is that buzzer telephone, which was made to have been there in Shastriji's room at the time of his death.and which could be used by Shastriji if he so liked. That was the statement made in reply to a question raised by me in February, 1966. Where is that buzzer telephone ? My information is that there was no buzzer telephone in that room. The buzzer telephone was in the suite, which has been rightly pointed out by my friend, Mr. T. N. Singh, in his statement, and anything in this suite cannot be used by Shastriji when he was in a particular bed-room. Therefore, a deliberate attempt has been made to mislead this House. That has to be explained by the Government. Then where is the original death certificate given by Dr. Chugh ? Because, according to my information, the Russian doctors refused to give a death certificate for Shastriji's death unless the original death certificate by an Indian doctor atttending on Shastriji was in their possession. And my allegation is that the original death certificate is still in the hands of the Russians and on the basis of that the Russian doctors signed the death certificate and of which much is made that there is a case. Now there is much weight in what Mr. T. N. Singh has said. It is always intravenous injections which are given in such emergencies, and never intramuscular injections are effective in such cases. An intramuscular injection does not act on the blood. It remains in the muscles of the body and it has no effect whatsoever on the blood system. It is only the intravenous injection which runs with the blood and which has effect on the circulation system and which can in certain cases revive the whole system. So, that is another question which has to be replied by the Government, namely, why an intramuscular injection was given and not an intravenous injection. Then another point. It is always an oxygen cylinder which is readily available for a heart patient because, whenever the heart attack comes, the first difficulty felt by the patient is the breathing difficulty, and to relieve immediately the breathing difficulty oxygen is administered in all such cases. What was made out in the statement of February, 1 966, was thai all kinds of things were tried to revive Shastriji's body. But no mention of oxygen being administered to him was there. So this is a major thing which has to be explained. Then the next point, which has to be explained, is the very serious one, which was brushed aside because of the Indian sentiments. What I am referring to is the request by Russia to both Mr. Chavan and Mr. Swaran Singh to allow post-mortem on Shastriji's body, because they themselves probably suspected some foul play and so they wanted to assure themselves that there was no foul play. They were also carrying a great responsibility. They had the honour of their country at the back of their mind and they wanted to be absolutely clear that no foul play was there. Why was the post-mortem request declined by our two Ministers? That is another point to be explained. It was not a case of a Bhargava dying here, or another person dying there. It was the question of the death of the beloved Prime Minister of this country and so the post-mortem could not be easily brushed aside under Indian sentiments. It was the prime need, it was the necessity of the hour, that Indian sentiments were kept aside and the post-mortem was allowed, so that the truth could come out and no lurking suspicion could remain in the minds of the people of this country that their beloved Prime Minister was killed. Then the next point is about the presence of Mr. Jan Mohammad. What was he doing in Shastriji's suite when his own personal attendant Shri Ramnath, had gone with hirn? And *horn* the little knowledge I have about Shastriji, Shri Ramnath was the devoted attendant of Shastriji for a number of years and one who would not leave Shastriji even for a minute. Where was he ? Why was he not allowed to give that glass of milk, that fatal glass of milk—I call it—which caused Shastriji's death ? Why was it served by somebody else, and not by Shri Ramnath ? That is another point to be clarified. And finally, the point to be clarified by Government is : Why was his body blue and black ? If it is a normal heart attack and death, there is no tiansformation in the body. It can be explained in two ways. Either some sort of an injection was given to mix up the issues of body turning black and blue, some sort o!" an injection, which will

[Shri M. P. Bhargava]

chemically produce some reaction on the body and which will make the body become black and blue and thus, hide the real truth of the body otherwise becoming only blue because of the effect of poison, and thus make it not a natural death. That is another point which has to be explained. And the second way in which the death could have occurred was if he died a natural death. Where was the necessity of all these things being hidden from the public. A statement should have been made immediately saying this is this, this is this, this is this, this is the chronological order of things. The time factor again is a very important thing in the whole episode. The exact time of death has to be ascertained and given to the public if the public mind is to be cleared of the lurking suspicion which they have about his death. And all these questions which I have raised, they cannot be answered by the Government because they have all the old facts, which they have already narrated here in reply to the question in February, 1966. And I might remind the House of a very significant question. I wanted to seek certain further clarifications about the circumstances of the death, and the reply given to me was, "Our loyalty and our respect for Shastriji is no less than the hon. Member's and therefore he should not try to cross-examine us." Is that a justifiable reply from responsible people ? This, if I may say so, was just evading the issue and, therefore, if the Government wants to clear their stand and if the people's minds have to be set at rest for all time to come, nothing short of a judicial enquiry presided over by a Supreme Court Judge can satisfy the people of this country who had high respect for their beloved Prime Minister who led them successfully in the time of war and then went to Tashkent to arrive at an honourable and peaceful solution. If that is to be cleared, the demand for an enquiry must be acceded to. I am told over a hundred Members of the Lok Sabha have already submitted a memorandum to this effect. The voice of the Rajya Sabha should join that voice of the Members of the Lok Sabha and we should compel the Government to appoint a Commission of Inquiry, a Judicial Commission, headed by a Supreme Court Judge. That is all what I wanted to say.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal) : Naturally, one cannot speak on this subject without a great deal of sentiment and emotion. Many of us had known Shastriji from very close quarters and we know his qualities. This matter has been discussed four years ago in this House and the other House. Now if there are any new points, new facts, which have come to light demanding a fresh look into this matter, certainly it should be done but as far as I can gather the main story is carried by Organiser which is the RSS journal. Now having known this journal I am a little chary of accepting *prima facie* or even otherwise what is stated in that journal.

SHRI T. N. SINGH : While raising the question I did not ___

SHRI BHUPESH GUPTA : If you go through that journal you will find the way the story has been served is a little interesting in the sense that it has its own angularity. Certainly it has not approached it from an objective angle. The account that is given in that RSS journal is political. One can see that whenever a Muslim name appears it is in more or less block letters....

SHRI NIRANJAN VARMA (Madhya Pradesh) : No, no; you are wrong.

SHRI BHUPESH GUPTA : Much is made of the fact that a certain bearer who is not supposed to be there served him instead of Raninath, who should have served. Again prominence is given to the name and the particular aspect of it. Naturally we are not prepared to accept what 'Organiser' says after having got a version from the Government. I do not think any Indian Government whetever its complexion will dare bring itself into a situation when it would not face facts over a matter like this. That is my view but yet I would still insist that if there is any new thing, any new facts, certainly it should be gone into but the political story rubbed over and over again by 'Organiser' should not influence us in the manner in which some people seek to utilise this story.

Now, Sir, with regard to the medicai aspect of it I cannot say anything but I think some of our best doctors, physicians and specialists were with Shastriji. I do not question their patriotism. Dr. Chugh and others are there, physicians, medicai men

and specialists. Am I to believe that they would conceal facts or would not look into facts if they had any doubts about it ? I should like one of those physicians or medical experts to come forward and cast some doubt about it, so far they have not done it. Why should I go in that case by the report of a story writer in a paper like 'Organiser' ignoring such eminent medical experts as Dr. Chugh and others ? I cannot for the life of m? understand this position being taken. Well, there were Russian authorities also there. Am I to understand that they would not also look into it if they had any suspicion about it? The Government of India and the Russian Government are both friendly Governments and their experts were there. Whatever material is available of the case do not seem to indicate that there had been any foul play of the type suggested by some. When I was reading the story I found many names had been brought in. Dr. Teja's name is mentioned; he is supposed to have been in Tashkent at the time. A Chinese girl, Mr. T. N. Kaul's former girl-friend, is also mentioned in the story. And you can understand this is the basis when they demand an enquiry. They also mention about one Mr. Kapur and about that Muslim bearer who does not usually serve. All these and other things are said there. Obviously such a story, such an account, has to be taken with not only a pinch of salt but a full pound of salt. I would state it very frankly, this is my view because the whole thing is a political build-up. But even then if there is anything new it should be looked into.

श्री राजनारायण : दो जबान से मत बोला करो, भूपेश ।

SHRI BHUPESH GUPTA : What did you say ?

SHRI RAJNARAIN : Don't speak with two mouths.

SHRI BHUPESH GUPTA : I have only one mouth; I do not have the mouth of 'Organiser'. And that is what I am precisely saying.

श्री राजनारायण : श्रीमन्, प्वाइंट आफ आर्डर । यह भूपेश गुप्त ने जो बार-बार दोषारोपण किया है वह बिलकुल बेबुनियाद है, गलत है । 'आर्गनाइजर' या किसी और अखबार की बात नहीं है । 'आर्गनाइजर' कहे या न कहे, इस सदन में मैं बार-बार मांग करता हूं कि श्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु के संबंध में जांच की जाय ।

SHRI BHUPESH GUPTA : It is not in good taste to say don't speak with two mouths. I did not say that Mr. Rajnarain spoke from 'Organiser'. You see I also read newspapers and journals. I am a journalist. I am talking about Organiser's story, not Mr. Rajnarain's story.

(Interruptions)

श्री निरंजन वर्मा : आर्गनाइजर के बारे में किस ने कहा है?

SHRI BHUPESH GUPTA : It is quite clear. All right, if you bring me out like that I shall come out on that. Well, Sir, political propaganda has been started again after four years over this matter.

श्री राजनारायण : यह डिमांड इस सदन में हर सेशन में उठी है । भूपेश गुप्त असत्य बोल रहे हैं कि वह चार साल की बात है ।

SHRI BHUPESH GUPTA : I never uttered a word because he may have a genuine opinion.

{Interruptions.)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Just a minute. This is a very serious matter.

श्री राजनारायण : इस को यह पोलिटिकल प्रोपेगन्डा बना रहे हैं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : You please listen to me. I think there is none in this House who has not got regard, respect and affection for that great leader.

SHRI RAJNARAIN : That is a different thing.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : He was one of our greatest leaders and we are dealing with the matter with all seriousness. So I would request Members not to interrupt othe-^. persons but deal with this with great respect, restraint and reverence.

THE LEADER OF THE OPPOSITION (SHRI S. N. MISHRA) : May I submit

[Shri-S. N. Mishia] that the matters that have been brought *to* light here, the aspects that have been brought to light, have to be dealt with by the hon. Member. An hon. Member might make a reference to a certain article which has appeared in a particular newspaper. While doing justice to the matter one will have to refer to that.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Vou were not here.

SHRI S. N. MISHRA : I am fully posted. He referred to the 'Organiser'. What I mean is this. Whatever points have been made by hon. Members have to be met by those who are opposed to this move. Now one does not make too much of what has appeared in a particular organ of a particular political party. In order to do justice to the debate on this matter one wiH have to refer to the points made by the hon. Members here and not make at completely irrelevant references to journals etc. It is to that kind of things that we take objection.

SHRI BHUPESH GUPTA: I can understand. I never mentioned and I was never referring to what Mr. T. N. Singh has said. I am speaking as I understand the situation. I have never said that Mr. Raj-narain or anybody has voiced the 'Organiser'. I having read one thing we are also following it. We are also literate people. We have also got some common-sense. We have also some human sympathies, some grey-matter tn our brain. We are not living in some island like Robinson Crusoe, where nothing is seen or known. Therefore, from that angle I am raising it. It is for the Government to decide it. I have no quarrel if the Government or you or the House decides that an enquiry should be held. I will not quarrel with it, but 1 am speaking from another aspect of it that I find it difficult and I am asking clarification from him. I am not disputing what they have said. This is a point of view. This is a way of looking at things. This is an assessment of some hon. Members and I have no doubt in believing their sincerity, especially when Mr. T. N. Singh speaks on the subject, but the moment I say something which does not echo exactly what they have said, immediately it should not be assumed, well, that I am off the mark, that I am speaking with two mouths and so on. It is not my custom. I am quite capable of speaking frankly and in a manner which I think is quite intelligible to a|l and I know the language in which I speak. Therefore, I say these are the points. This is why I have my difficulties. I do not wish to say very much. The only thing I appeal. Lal Bahadur Shastri has been one of our greatest martyrs. His name shall be remembered not only in this country, but all over the world. He was a man who was dedicated to one of the noblest causes for which he gave his life. He died in harness. Let not his name be tarnished by anybody, 'Organiser' or otherwise, by any kind of overtones of political propaganda. The truth has to be revealed and if it is yet to be revealed it should be done. For that if any step is needed, let it be taken, but I am afraid in some quarters at least there is an attempt to rerive the issue for a kind of political propaganda which should not be associated with this great thing that we are discussing today. That is all. Now, you decide whatever you like.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN): Mr. Krishan Kant.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR

श्री राजनारायण : यह तो सब को आप इस समय कह रहे हैं ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : I have permitted you and 1 must permit others also.

श्री राजनारायण : आपने हमको परमिट किया इसलिये नहीं कि कोई कृपा की, हमारा नाम तो इसमें है, हमने डिसकशन मांगा है ।

श्री कृष्ण कान्त : अरे, हम पर कृपा कर रहे हैं । मुझे बोलने दो न ।

श्री राजनारायण : मैं यह जानना चाहता हूं कि इसमें इस वक्त मंत्री का जवाब फाइनल होगा या चव्हाण साहब यहां आ कर जवाब देंगे ।

ALI KHAN) : I have also got great respect. Please sit down, Mr. Raj-narain.

श्री राजनारायण : यह सब कहने का हमारे ऊपर कुछ असर नहीं पड़ता । आप रिगार्ड करते थे और आपने कभी इंक्वायरी

की मांग नहीं की, खाली यह कह दिया कि हम रिगार्ड रखते हैं ।

SHRI KRISHAN KANT : Sir, I hope Mr. Rajnarain does not object to my speaking.

श्री राजनारायण : नहीं भाई बोलो तुम ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : Please be brief.

SHRI KRISHAN KANT : Sir, I have not even started and you are asking me to be brief. Mr. Vice-Chairman, Sir, the death of Lal Bahadur Shastri, that great son of India, that martyr for peace, whose picture is enshrined in the hearts of millions of Indians even today, was a question mark when his body was brought here and many of us who were emotionally and sentimentally attached to him felt something wrong about it. Many a question was asked and even at that time, though we were not satisfied, Mr. T. N. Singh asked us to be satisfied. Now, when he has raised the question, it means that we have to take serious note of it. It is not merely that the 'Organiser' has raised the question. I would not have taken serious note of it if anybody else had raised the question. When a man of the position and attachment of Mr. T. N. Singh raises this question, this Government, this House and the country has to take it very seriously. I would not like to go into the various questions posed by Mr. T. N. Singh, Mr. Rajnarain and Mr. M. P. Bhar-gava very relevantly. I do not think the Government is hesitant, in any way, to probe into it, as the Minister himself has said. Their mind is not closed about it. At a certain stage the facts may not have come out and that is why the Government has replied so. I agree with the demand of the House that Mr. Chavan himself should look into all the points that have been mentioned here and after that come to the House, probably tomorrow at five o'clock, after the private Members' business is over. This can be taken up then and he can reply to the House. I would suggest that the questions which have been raised today are very serious—about the time of the death, the giving of milk, the persons who was serving him, the injection given to him, whether it is intramuscular or intravenous. Not only that. Why was his place of residence changed ? Then, the bearer. All these questions will continue to rattle the minds of the people of India if they are hot properly dealt with by the Government. I do not think our Government or the Russian Government or anybody should have any objection to any probe into it. After Netaji Subhas Chandra Bose's death, enquiries have been held twice, and probably they want to do something again....

SHRI CHITTA BASU (West Bengal) : Not twice .

SHRI KRISHAN KANT : So, on this question it is better, without taking any political attitude on it, that we look into it. If it was a matter raised politically by any one else, I would have opposed it, but when Mr. T. N. Singh raises the question it cannot be a political matter. He raises it from a humanitarian point of view, from a national point of view. I think the hon. Home Minister should study this question and, if necessary, may talk to Mr. T. N. Singh and others who feel about it. He must come before the House and reply to the questions and if need be an enquiry should be held. Until an enquiry is held and proper facts are placed before the country, people may not be satisfied on this matter. About this hero-Prime Minister, martyr-Prime Minister of the country, unless these doubts are clarified, nobody will be satisfied and I do not think that the Government will be in any way interested in hiding facts and in not finding the truth.

श्री निरंजन वर्मा : श्रीमन्, हमारी पार्टी की तरफ से कोई किसी ने कुछ नहीं कहा है ।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : There is no question of party. It is a more serious matter. Please.

श्री निरंजन वर्मा : मैं बहुत थोड़ा कहूंगा । श्री भूपेश गुप्ता ने हमारी पार्टी, आर्गेनाइजर के बारे में कहा । थोड़ा सा सुनिये, मैं निवेदन कर रहा हूं, दो मिनट में मैं अपनी बात को कह दूंगा ।

मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह बड़ा गम्भीर विषय है और श्री लाल बहादुर शास्त्री जी हमारे देश के एक महान नेता थे । हमारे मित्र श्री टी० एन० सिंह जी ने, बाबू राजनारायण जी ने और भार्गव साहब ने बहुत स्पष्ट

[श्री निरंजन वर्मा]

रूप से इसके बारे में देश भर में जो शंकायें प्रकट की जा रही हैं उन तथ्यों को सामने रखा है । हमारी सरकार से यही मांग है कि वह या तो सुप्रीम कोर्ट के जज के द्वारा इस बात की पूरी जांच कराये या पार्लियामेंट के कुछ व्यक्तियों का एक कमिशन बिठा कर के उनके द्वारा जांच कराये ताकि देश में जो एक भ्रम का वातावरण है वह दूर हो जाय ।

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : Mr. Vice-Chairman, some points have been raised about this person Jan Mohammad. Some questions have been raised about him. This was also raised in 1966 by Shri A. B. Vajpayee when he was a Member of the Rajya Sabha. At that time it was clarified, and I repeat it again when this point was made, enquiries were made and it was categorically stated that the last glass of milk was served by Ramnath and not by Jan Mohammad. Till the last moment of his life Ramnath was serving the late Prime Minister and not Jan Mohammad.

SHRI MOHAN LAL GAUTAM : Sir, as the Home Minister has agreed, I would only request that the Minister of State should not express himself and make any commitments, so that the Minister in charge may have a clean slate and he can take up any attitude. Otherwise any commitment made by the Minister of State would stand in the way of a clearer thinking and expressing himself clearly. That is my request.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : Actually you should have a clearer thinking on this matter. I am not coming in the way of a clearer thinking. I am only saying what has been already said. I am just bringing to the notice of the House that this point was raised earlier and it was replied to categorically by the Government, because Mr. Bhargava has asked and several other Members have asked as to who was the person who served the last glass of milk. Enquiries were made from Ramnath himself and he conveyed that it was he who himself served the last glass of milk to Shastriji. It was not Jan Mohammad or any body else who served.

I want also to say that this story about the Chinese girl etc. is completely baseless. It has also been stated that there is no truth in the matter. Also the question of Teja has been raised, and I wish again to clarify this matter. It is rather funny that in such a serious matter to which we attach so much importance such things are brought in. We all know that our Publicity Officer in the Indian Embassy in Moscow, whose name was also Teja, was there. But he had no thing to do with Dharma Teja. Dharma Teja was hundreds of thousands of miles away from there and he had nothing to do with that. But since the Publicily Officer of the Indian Embassy, whose name was Teja, was there, and he is brought in like this ___

श्री राजनारायण : श्रीमन्, मैं पौइन्ट आफ आर्डर के रूप में जानना चाहूंगा । सुनिये । यह मंत्री कैसे कह सकते हैं कि धर्म तेजा था मास्को । How does he know ? ग़लत कहते हैं । कैसे कहते हैं?

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : We found this out from whatever information we have positively.

SHRI BHUPESH GUPTA : I had a personal talk with Mr. Chavan. When he got the news, he immediately went there. I think it better he says that.

SHRI VIDYA CHARAN SHUKLA : 1 have said in the beginning itself that since Mr. Chavan himself was present there, it would be perfectly in order if he could give the benefit of his personal knowledge to this House and to the other House about this matter. This matter must be treated with all seriousness and all earnestness. These are some facts on record which I wanted to bring again to the notice of the House.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI AKBAR ALI KHAN) : In view of the importance of the matter and the feeling of the House I would like the Home Minister to come tomorrow at 5 o'clock or any time convenient to him and reply on this matter so that we might hear him, but certainly before the House adjourns.

The House stands adjourned till 11.00 A. M. tomorrow.

The House then adjourned at twenty-five minutes past six of the clock till eleven of the clock on Friday, the 3rd April, 1970.